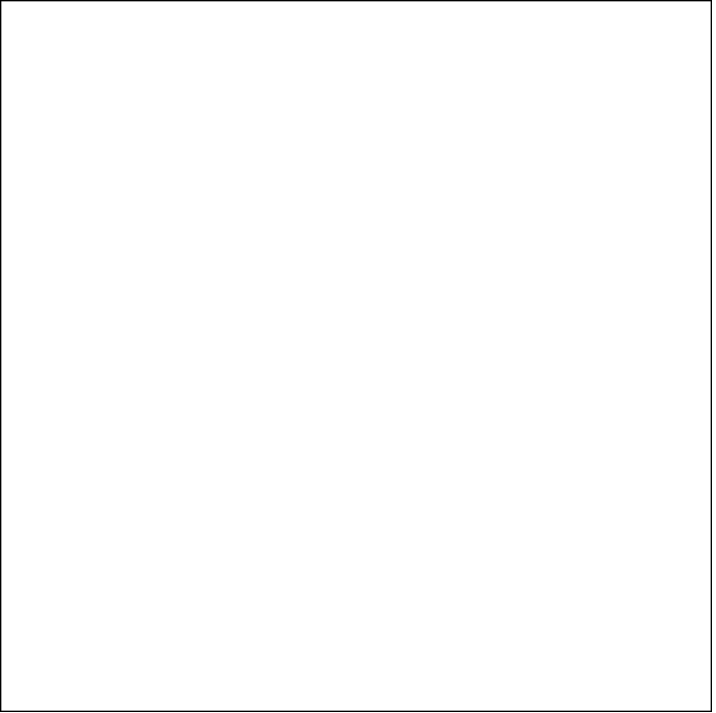




(uten bilder)

✎ Lesley Koyi, Ursula Natula
👤 Brian Wambi
📄 Nandani
🗣️ hindi
📖 niva 3



एहं एन जभ मुंनै शहर के लिए एर छोजा



Barnebøker for Norge

barnebok.no

एहं एन जभ मुंनै शहर के लिए एर छोजा

Skrevet av: Lesley Koyi, Ursula Natula
Illustrert av: Brian Wambi
Oversatt av: Nandani

Denne fortellingen kommer fra African Storybook (africanstorybook.org) og er videreformidlet av Barnebøker for Norge (barnebok.no), som tilbyr barnebøker på mange språk som snakkes i Norge.

Dette verket er lisensiert under en Creative Commons

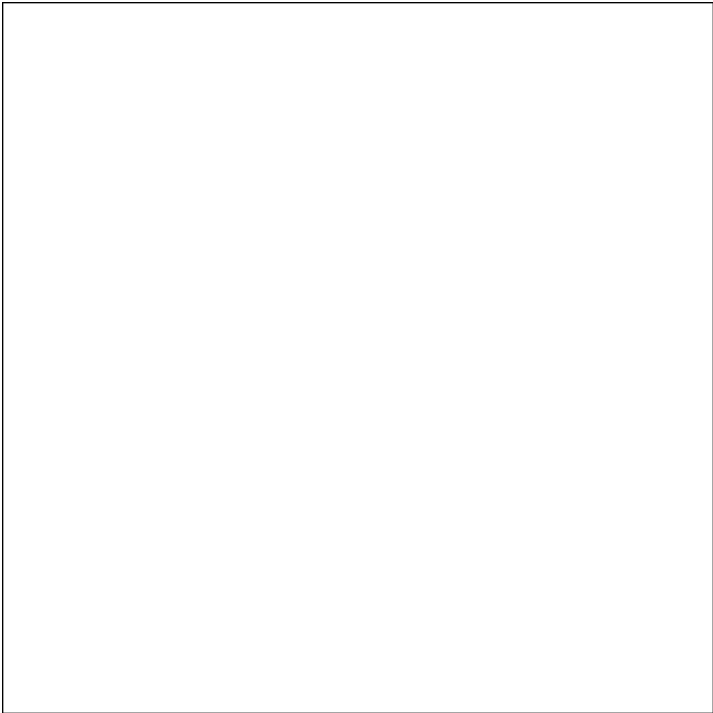
[Navngivelse 4.0 Internasjonal Lisens.](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/deed.no)

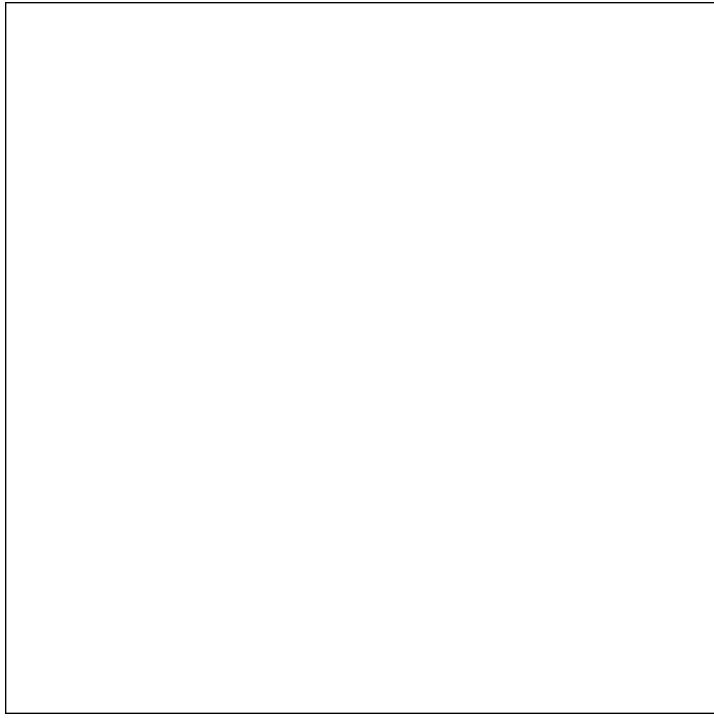
<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/deed.no>



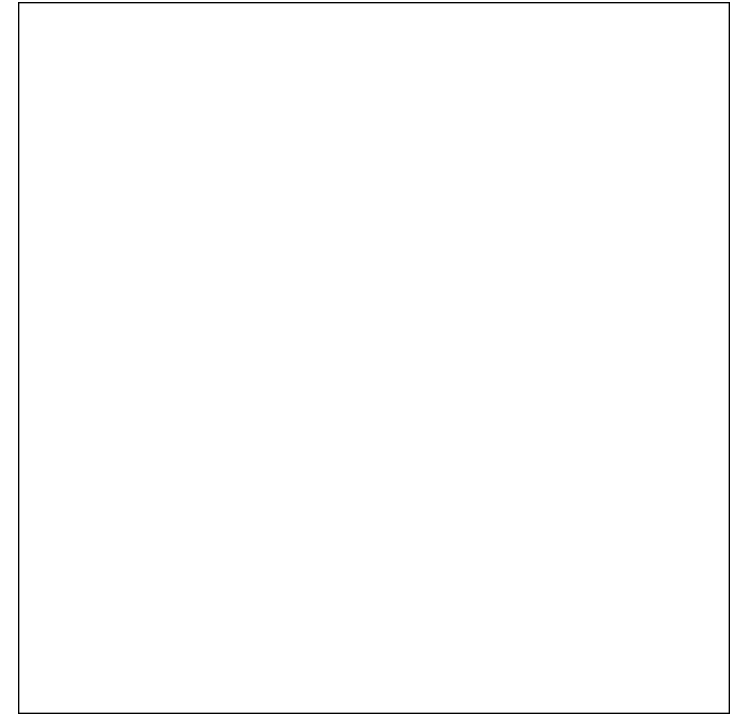
मेरे गाँव का छोटा सा बस स्टैंड लोगों और भीड़-भाड़ वाली बसों से भरा रहता है। वह मैदान बहुत सारी चीजों से और भरा रहता है। कंडक्टर उस जगह का नाम चिल्लाते रहते हैं जहाँ बस जा रही होती है।

॥॥ अंकुशं मुनेः शिवोऽपि ॥॥
"शिवोऽपि मुनेः शिवोऽपि ॥॥"



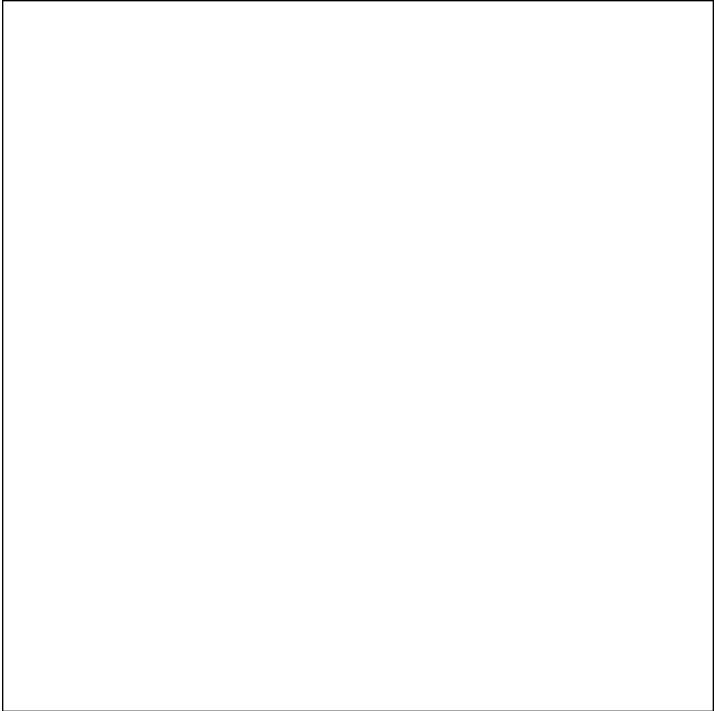


शहर जाने वाली बस लगभग भर चुकी थी, लेकिन और लोग इसमें जाने के लिए धक्के दे रहे थे। कुछ लोगों ने अपने सामान बस के अंदर रखे थे। और लोगों ने उसे अंदर बने ताखों पर रखा था।

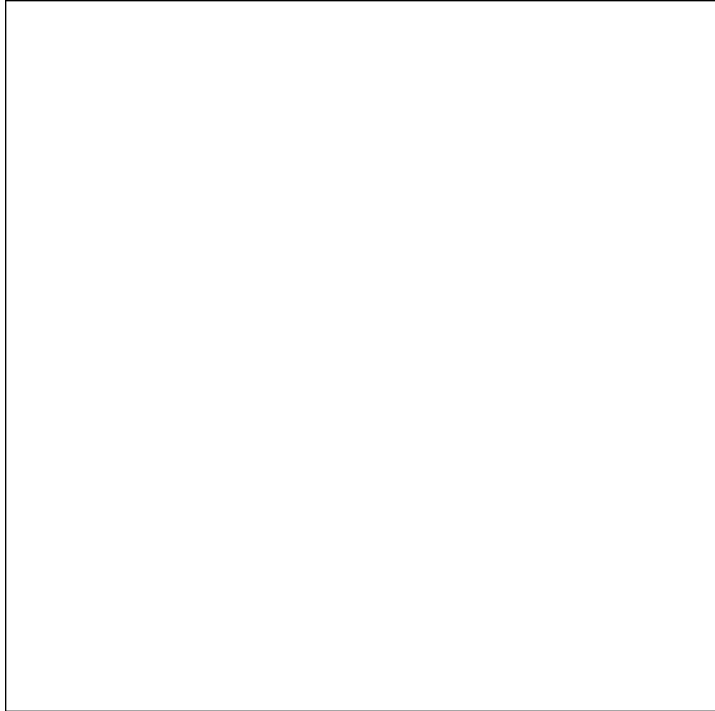


वापस जाने वाली बस जल्द ही भर गई। जल्द ही पूर्व की ओर चल दी। सबसे जरूरी मेरे लिए अभी था अपने चाचा के घर को ढूंढना।

नये यात्री अपना टिकट हाथों में दबाये, भीड़ वाली बस में बैठने के लिए जगह देख रहे थे। औरते जो छोटे बच्चों के साथ थी वे उन्हें इस लंबी यात्रा के लिए सुविधापूर्ण बना रही थीं।

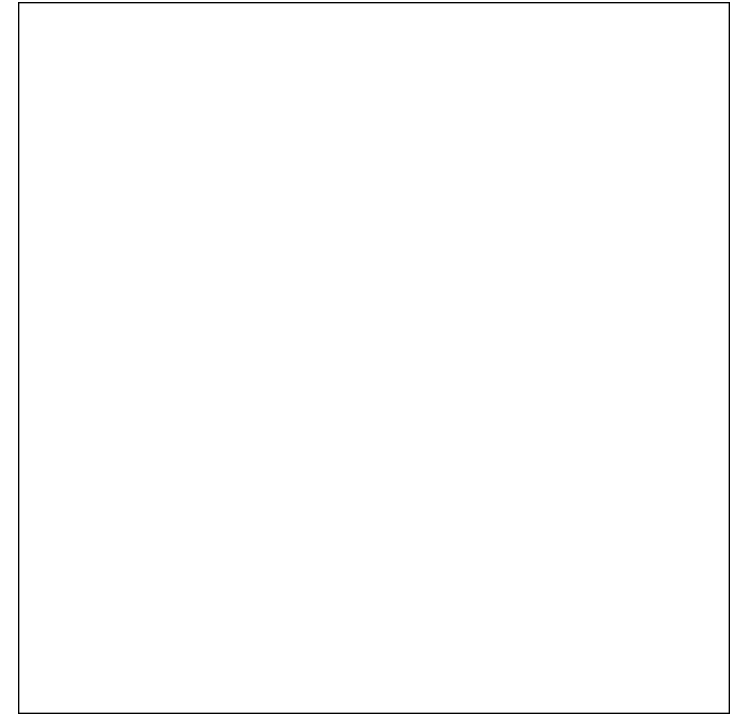


नौ घंटे बाद, मैं जगा, जोर के पीटने और यात्रियों की बुलाने की आवाज़ से जो मेरे गाँव वापस जा रहे थे। मैंने अपना छोटा सा बैग उठाया और बस से बाहर कूद गया।



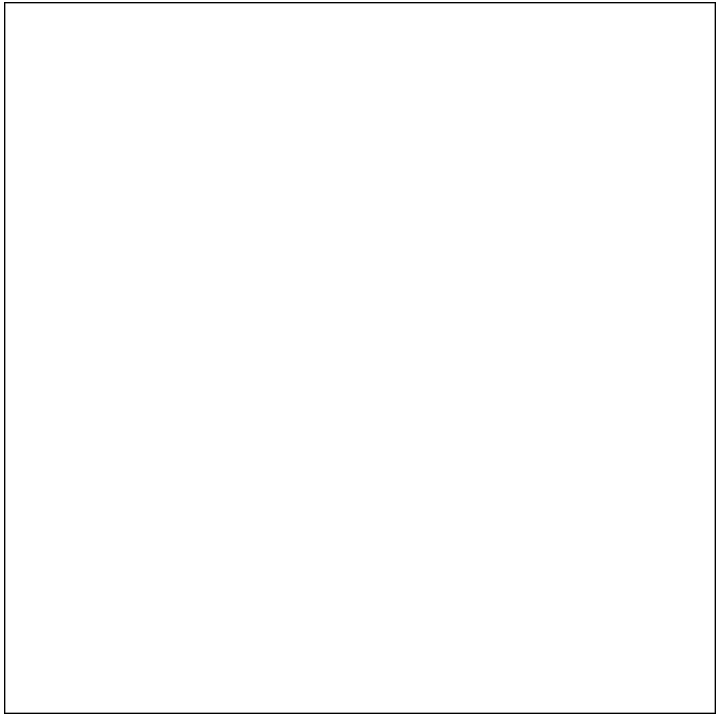


मैं एक खिड़की के बगल में घुस गया। मेरे बगल में बैठे हुए आदमी ने हरे रंग का प्लास्टिक बैग जोर से पकड़ रखा था। उसने पुरानी चप्पल, घिसा हुआ कोट पहना था और वह घबराया हुआ लग रहा था।

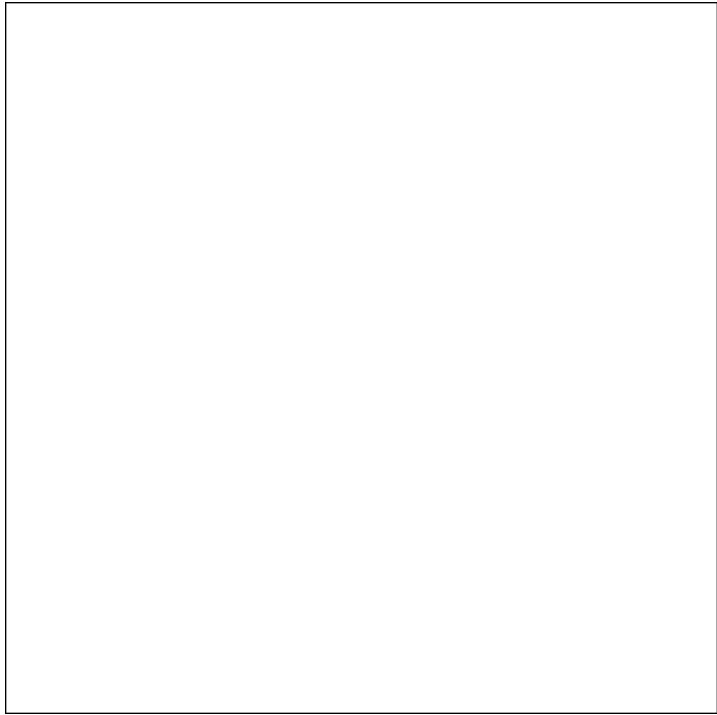


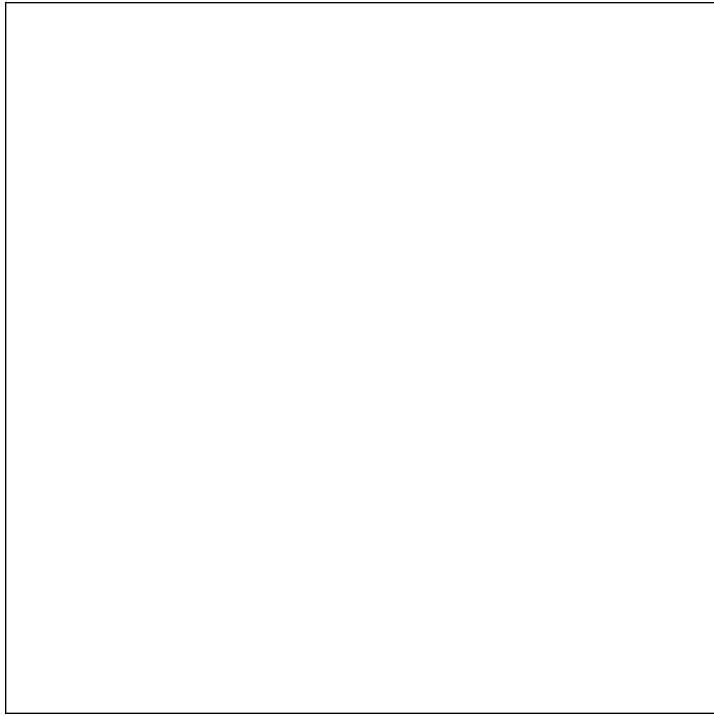
रास्ते में, मैं उस जगह का नाम याद कर रहा था जहाँ मेरे चाचा उस बड़े शहर में रहते हैं। मैं नींद में भी वो नाम बड़बड़ा रहा था।

बस से बाहर देखते हुये मैंने ये महसूस किया कि मैं अपने
गाँव की छोट रहा हूँ, उस जगह को जहाँ मैं बड़ा हुआ हूँ। मैं
एक बड़े शहर में जा रहा था।

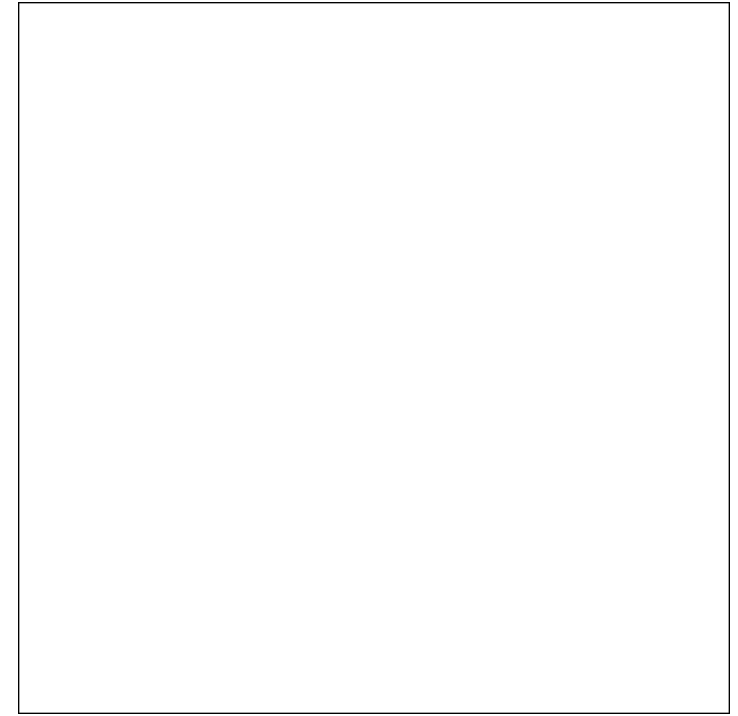


लेकिन मेरा मन घर की चला गया। क्या मेरी माँ ठीक हिगी?
क्या मेरे खरगोश को कुछ पूसे मिलेंगे? क्या मेरे भाई को
उन पेड़ों में पानी डालना याद रहेगा जो मैंने लगाये हैं?





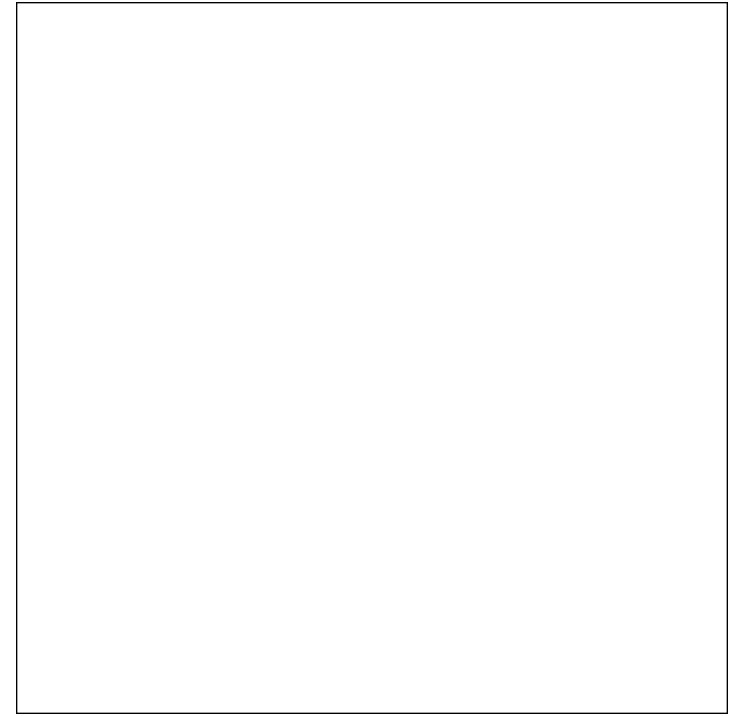
लोगो के चढ़ने का काम खत्म हुआ और सभी यात्री बैठ गए। फेरीवाले अभी भी बस में घुस रहे थे अपने समान को यात्रियों को बेचने के लिये। सभी उन चीजों का नाम चिल्ला रहे थे जो उन्हें बेचनी थी। वे शब्द मुझे मजेदार लग रहे थे।



जब यात्रा आगे बढ़ी, बस अंदर से काफी गर्म हो गयी। मैंने अपनी आँखों को बंद कर लिया सोने की आशा में।



ये सभी गतिविधियां बस के आवाज़ से बाधित हुई, यह एक संकेत था कि हम जाने के लिये तैयार हैं। कंडक्टर फेरीवालो पर चिल्लाया कि वे बस से बाहर जाएं।



फेरीवाले एक दूसरे को धक्का दे रहे थे ताकि वे बस से बाहर जा सकें। कुछ यात्रियों को खुल्ले पैसे वापस लौटा रहे थे। दूसरे अंतिम समय में और समान बेचने की कोशिश में लगे रहे।